श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

सा विद्या या विमुक्तये

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान परिचय

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर ________ ५ शहर अक्टूबर - २०१९

विद्यार्थी का नाम ____________________

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	मंदर मेरु
(२)	तेज के
(३)	उत्तम धार्मिक
(४)	अप्रत्याख्यानी
(५)	कामरूप पट्टन
(६)	आसक्ति
(७)	निषध पर्वत
(८)	प्रत्याख्यानी मान
(९)	श्री अजितनाथ
(१०)	दिक्परिमाण
(११)	पाँच भूतों के
(१२)	नो कषाय
(१३)	क्षेत्रवृद्धि
(१४)	अनंतानुबंधी क्रोध
(१५)	तुंबफल के बीज
(१६)	मेरु पर्वत
(१७)	सुधर्मा स्वामी की
(१८)	कायिक संज्ञा
(१९)	वर्णधर
(२०)	हे शांति जिन

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	अनंतानुबंधी लोभ
(२)	दिक्परिमाण व्रत
(३)	श्री अजितनाथ
(४)	अक्षत पूजा
(५)	देवकुरु क्षेत्र
(६)	अध्यवसायों
(७)	जन्मान्तर-गत्यान्तर
(८)	शिखरी पर्वत
(९)	प्रत्याख्यानी
(१०)	अशनता/अनजाने
(११)	स्याद्वाद
(१२)	इन्द्र
(१३)	कंचनगिरि
(१४)	मेरु शिखर
(१५)	अधोदिशाप्रमाणातिक्रम
(५)	पुरुष - स्त्री
(६)	विस्मृति से
(७)	बहरी के मलडी अग्नि
(८)	शरदऋतु का चंद्र
(९)	यथाख्यात
(१०)	——
(११)	शोभा
(१२)	पूर्व की
(१३)	समूह से
(१४)	निर्लोभता
(१५)	ये मैं
(१६)	विपरीत
(१७)	अंजन / काजल
(१८)	नेतर की सोटी
(१९)	परलोक
(२०)	पर्वतों में

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	देवता
(२)	आपो
(३)	नीच गोत्र
(४)	शियर

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	५	(६)	३
(२)	७	(७)	४
(३)	९	(८)	६
(४)	८	(९)	२
(५)	१०	(१०)	१

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	३
(२)	२५
(३)	५०० योजन
(४)	८
(५)	१६
(६)	१२ वर्ष
(७)	१०० बार
(८)	५००
(९)	२५ यो०
(१०)	११

प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर	
(१)	×	(१)	७
(२)	×	(२)	२३
(३)	✓	(३)	१५
(४)	✓	(४)	११
(५)	×	(५)	३
(६)	✓	(६)	१८
(७)	×	(७)	२४
(८)	✓	(८)	५
(९)	✓	(९)	९
(१०)	×	(१०)	१३

[ ] + [ ] + [ ] + [ ] + [ ] + [ ] + [ ] + [ ] = [ ]

प्रश्न-१ मिले हुए गुण | प्रश्न-२ मिले हुए गुण | प्रश्न-३ मिले हुए गुण | प्रश्न-४ मिले हुए गुण | प्रश्न-५ मिले हुए गुण | प्रश्न-६ मिले हुए गुण | प्रश्न-७ मिले हुए गुण | प्रश्न-८ मिले हुए गुण | कुल गुण

रीमार्क ____________________ जांचनेवाले की सही ____________________

प्रश्न - ८

१. जंबुद्वीप में कुलदो सौ उनहत्तर पर्वत है। गजदंतगिरी पर्वत हाथी के दांत जैसे आकार के है। ये चार है। मुल में पांचसो योजन चौडे और छोर पर अंगुल के असंख्यातवे भाग के जितने पतले है। ये पर्वत लंबे और बिचमें वक्र होने से दंतशूल जैसे दिखाई देते है। उसमेसे सौमनस और विद्युत्प्रभ नामके दो पर्वत देवकुरु को घेरकर है। सौमनस पर्वत श्वेत रंग का है। विद्युत्प्रभ पर्वत लाल रंग का है। माल्यवंत और गंधमादन ये दो पर्वत उत्तरकुरु को घेरकर रहे है। उनमेसे माल्यवंत पर्वत हरे रंग का है। और गंधमादन पर्वत पीले रंग का है।

२. देवपूजा में उपयोग में आनेवाली हर एक सामग्री शुद्ध होनी चाहिए। द्रव्य अशुद्ध वापरनेसे जीव संसारमें बहुत समय तक परिभ्रमण करता रहता है। दुःख कष्ट पाकर नीच कुलोमें जन्म-मरण करता है। परमात्मा की पूजा करते समय साफ केशर, कपूर, बरास, जातिवंत चंदन, धूप, गाय के घी का दिपक, अखंड अक्षत, ताजे बनाये हुऐ, चुहे-बिल्ली आदि हिंसक जीवोने न सुंघे हुऐ, न स्पर्शे हुऐ और न झुठलाये हुऐ ऐसे पक्वान तथा नैवेद्य और ताजे मनोहर सुस्वादिष्ट मनभावक सचित्त- अचित्त फल वापरना चाहिए। इससे पुण्यानुबंधी पुण्य का उपार्जन होता है।

३. जिस कर्म के उदय से जीव को हंसना आये वह हास्य नोकषाय चारित्र मोहनीय कर्म। जिस कर्म के उदय से जीव को बाह्य निमित्त से अथवा निमित्त बिना सुख में रति या प्रीति या आनंद की अनुभूति हो वह रति नोकषाय चारित्र मोहनीय कर्म। जिस कर्म के उदय से जीव को दुःख में अरती- अप्रीति की अनुभुती होती है वह अरति नोकषाय चारित्र मोहनीय कर्म। जिस कर्म के उदय से जीव को शोक हो वह शोक नोकषाय चारित्र मोहनीय कर्म। जिस कर्म के उदय से जीव को डर-भय लगे वह भय नोकषाय चारित्र मोहनीय कर्म। जिस कर्म के उदय से जुगुप्सा जागे वह जुगुप्सा नोकषाय चारित्र मोहनीय कर्म। ये कर्म निमित्त अथवा बिना निमित्त भी उदय में आते है।

४. दुनिया में लोभ से बड़ा कोई समुद्र नही है। लोभ समुद्र इतना गहरा और इतना चौडा विशाल है कि जिसके अंदर ये तीनो जगत डुब जाते है। इन तीनो जगत में रहे हुऐ सुंदर पदार्थो की इस जीव को प्राप्ती होती है तो भी लोभ समुद्र तृप्त नही होता है। लोभ से मानव असंतोषी बनता है। धर्मात्मा जीवों को लोभ को काबु में लेने के लिये तथा लंबे प्रवास या हिंसावाले व्यापार से होती हिंसा को अटकाने के लिए दिशाव्रत का पालन करना चाहिए। इस दिशाव्रत के द्वारा मन को पूरी दुनिया के विषयो में भटकने से अटकाकर, अपने स्वरूप में लाकर रखने की आंतर सूचना करने में आयी है। इस तरह इस व्रत का रहस्य है।

५. जगत मिथ्या है। यह संसार इंद्रजाल है और स्वप्न के जैसा है। तो पंचभूत है या नही? सच में इंद्रजाल जैसे मायावी संसार में पंचभूत जैसा कुछ नही है ऐसी शंका व्यक्त स्वामी को हो गयी थी। वीरप्रभु ने ऐसा बताया की, स्वप्नवत का अर्थ आत्मा को परमात्मा बनाने के लिये कुटुंब, स्त्री, पुत्र, परिवार, धन संपत्ति वगैरे स्वप्न में मिले जैसी है। उनपर आसक्ती नही करनी चाहिए। इस वस्तुओंको स्वप्न समान समझकर उनके उपर की आसक्ती छोडके आत्मा को मोक्ष के लिये प्रयत्न करना चाहिए। इस तरह ही इन वेदपदोंका सत्य अर्थ है।